



story
weaver

पठन स्तर ३

कहाँ गये गालों के गड़ढे?

Author: Radha HS

Illustrator: Kruttika Susarla

Translator: Ashvini Vyas



"अप्पा... इम्मा... जल्दी आओ!" लांगलेन ने आवाज़ लगाई।

उन्होंने लांगलेन को घुटनों के बल झुक कर अलमारी के नीचे देखते हुए पाया। उसके नीचे बिल्ली के तीन बच्चे धीमे-धीमे, म्याऊं-म्याऊं करते हुए एक दूसरे के साथ खेल रहे थे।

"इम्मा..." लांगलेन कुछ कहने वाली थी कि इम्मा ने उसे चुप कर दिया - "श...! धीरे , " इम्मा बोली।

"बल्लि के बच्चे बहुत जल्दी डर जाते हैं।"



अचानक , एक नारंगी बलि्ली खड़िकी से कूद कर अंदर आई। वह पास खड़े लोगों की ओर देखे बनिा फुर्ती के साथ कमरे की एक दीवार से सट कर लेट गई। तीनों बच्चे झटपट आकर उसका दूध पीने लगे।

लांगलेन और उसके इम्मा-अप्पा पंजों के बल चलते हुए बनिा आहत कएि कमरे से बाहर नकिल गए।



लांगलेन ने पूछा , "क्या वह हल्की-गहरी काली धारियों वाला बच्चा इस बलि्ली का नहीं है?"

"इसी का है , " अप्पा ने जवाब दिया।

"तो वह अपनी मां की तरह नारंगी क्यों नहीं है?"

"हो सकता है उसके पापा ऐसे भूरी धारियों वाले हों।"

लांगलेन सोच रही थी, उसके पापा ने बोलना जारी रखा, "भूरी धारियों वाले बच्चे का रंग पापा के जैसा है, ठीक वैसे ही जैसे लांगलेन के घुंघराले बाल उसके अप्पा जैसे हैं!"



"लेकिन सब कहते हैं कि मैं बिल्कुल इम्मा के जैसी दखिती हूं। देखो, यहां तक कि हमारी ठुड्डी में गड्ढे भी एक जैसे हैं जसिसे हमारी ठुड्डी दो हसिसों में बंटी हुई सी नज़र आती है।"

"तुम थोड़ी-थोड़ी हम दोनों जैसी लगती हो, क्योंकि तुम हमारी प्यारी लांगलेन हो," इम्मा बोली और उसे बाहों में भींच कर गले से लगा लिया।

"क्या वह काला-सफ़ेद बच्चा भी थोड़ा उसके पापा और थोड़ा मम्मी जैसा दखिता है?"



"हां। सभी ऐसे जीव जो दो जीवों की संतान होते हैं, उनमें माता और पति दोनों की वशिषताएं होती हैं," अप्पा ने समझाया।

"वशिषताएं? रुको मुझे सोचने दो। क्या मेरे घुंघराले बालों को मेरी वशिषता कहा जायेगा?"

"हां, यह एक वशिषता है, लांगलेन। कोई भी गुण या लक्षण जो तुम में है, वह एक वशिषता यानी खूबी ही तो है! क्या तुम सोच कर बता सकती हो कि तुम्हारी दूसरी वशिषताएं क्या हैं?" इम्मा ने पूछा।

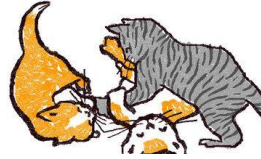
"हूं! मेरी लंबाई ? "

"हां , वह दूसरी वशिषता है। तुम्हारी आंखों का रंग , कानों का आकार, हाथ और पैर की अंगुलियों की लंबाई और तुम्हारी नाक की बनावट, सभी कुछ तुम्हारी वशिषताएं हैं , " इम्मा ने समझाया।

"मेरे घुंघराले बाल अप्पा से मली एक वशीषता है और ठुड्डी के बीच का गड्ढा आप से मली हुई वशीषता है। क्या आपको यह वशीषताएं आपके अभभावकों से मली है?" "हां! तुमने बनिा समय गंवाए सही पकड़ा। और उन्है यह वशीषताएं उनके माता-पति से मली है , " इम्मा ने आगे जोड़ा।





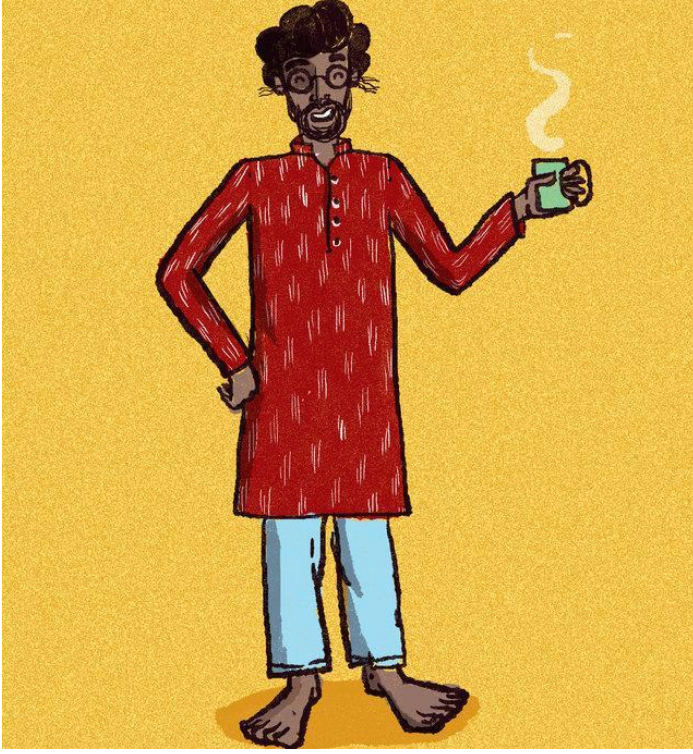


"लेकनि! लांगलेन ने आश्चर्यचकति होते हुए पूछा, "न तो मेरी दादी और न ही नानी की ठुड्डी में गड्ढा है। आपको यह वशिषता कहां से मली?"

"कभी-कभी ये वशिषताएं पछिली या उससे पहले वाली किसी पीढ़ी से आ जाती हैं। मेरे नानाजी , जिन्हें हम बच्चे पूंफू कहते थे, उनकी ठुड्डी में गड्ढा था। उनके बच्चों में , जनिमें मेरी मां भी है , यह वशिषता नहीं थी। लेकनि मुझमें ये वशिषता है और ये वशिषता मुझसे तुमको मली है।"

"इस वजह से मैं आप सब की वशिषताओं का एक पुलदि हूं , बस " लांगलेन थोड़ी दुःखी होते हुए बोली। इम्मा ने उसे फुर्ती से गले लगा लिया। "नहीं लांगलेन , माता-पति से बच्चों

में जाने को अनुवांशकिता कहते हैं। हमारी वशिषताएं एक समान हो सकती हैं ,
लेकिन हम में से हरेक अलग है। तुम्हारी तमाम वशिषताओं का मेलजोल तुम्हें
वशिषिट बनाता है!"



"मेरी ओर देखो लांगलेन," अप्पा बोले। "मैं बल्किुल वशिष्ट हूं। मेरा कद खूब लंबा है, मेरे सरि, चेहरे और कानों पे बड़े-बड़े घुंघराले बाल हैं। और मैं दुनिया में सबसे चौड़े पैरों वाला व्यक्ति हूं। अगर तुम्हारे कानों पर बहुत बड़े-बड़े और घुंघराले बाल हों तो तुम क्या करोगी?"



"हूं... मैं उनकी चोटी गूंथ कर उसमें रंगीन रबरबैंड लगाऊंगी!"
इम्मा दोनों की ओर देख कर हंस पड़ी। औरतों के कानों में बाल नहीं होते , लेकिन
लगता है कऱऐसे बेवकूफी भरे मज़ाक करने की वशिषता तुम्हें अपने पतिाजी से
मली है!"



अप्पा कमरे से बाहर चले गए और लांगलेन अपनी इम्मा की गोद में समा गई।

"इम्मा, मेरा एक सवाल और है। *इबोक हमेशा कहती है कि हंसते समय आपके भी गालों में गड्ढे पड़ जाया करते थे। वह अब कहां गुम हो गए?"

हंसते हुए इम्मा बोली, "गालों में गड्ढे पड़ने वाली वशिषता मुझे अपनी मां से मली थी। लेकिन, हरेक वशिषता के पीछे कई वजह होती हैं। और किसी वजह से कोई वशिषता सामने आती है, तो किसी दूसरी वजह से गायब भी हो सकती है!"

*इबोक: मणपिरी भाषा में नानीमाँ



अप्पा एक प्लेट लेकर आए जो ढकी हुई थी।

"मैं वह वजह हूँ जिसके जादू से इस प्लेट में यह स्वादभिष्ट चीज़ें आई हैं!" यह कहने के साथ ही उन्होंने प्लेट पर ढका नैपकनि हटा दिया। प्लेट में गर्मागर्म वड़े रखे हुए थे।

"और हम वह वजह हैं जो इन्हें गायब कर देंगे?" यह कहते हुए लांगलेन ने किसी के कहने-सुनने का इंतजार किए बिना एक वड़ा उठाकर अपने मुँह में भर लिया।



मुश्कलि शब्दों के अर्थ:

इम्मा: मणपिरी भाषा में माँ

पुफू: मणपिरी भाषा में नानाजी

इबोक: मणपिरी भाषा में नानीमाँ

गड्ढा: ठुड्डी के बीच का दबा हसिसा जसिसे ठुड्डी या ठोड़ी दो हसिसों में बंटी हुई
लगती है

लक्षण: खूबियां, जैसे घुंघराले बाल, ठुड्डी का गड्ढा या डपिल

अनुवांशकिता: माता-पति से वशिषताओं का बच्चों में जाना

पीढ़ी: एक ही समय में जन्म लेने और रहने वाले लोग

वशिषिट: अलग हट कर, अपनी तरह का अनोखा

प्रभाव: असर

वड़ा: तला हुआ स्वादषिट व्यंजन



अपना पारिवारिक पेड़ बनाना

जैसा कि आपको अब तक जान ही गए होंगे की लांगलेन की इम्मा (मम्मी) मणपुरि से है और अप्पा (पापा) तमलिनाडु से।

क्या आप भी लांगलेन की तरह (पेज 7 और पेज 8) अपना पारिवारिक पेड़ बनाना चाहेंगे? एक कागज़ और पेन उठाइये और इसे तुरंत ही बनाइये। यदि आप कहीं भी अटक जाएं, तो अपने परिवार वालों की मदद लें।



आपका काल्पनिक पालतू जीव कैसा होगा?

क्या उसके बाल सीधे होंगे या घुंघराले?

और उसकी नाक गोल-मटोल होगी या फरि तकिनी?

एक पैर, दो पैर या और भी ज़्यादा पैर?

पूँछ कुत्ते की या फरि खूंखार शेर जैसी?

अपने इस 'बहुत ही अलग' गुणों वाले काल्पनिक जानवर का

एक चित्र बनाइये और सभी को बेझझिक दिखाइए!



This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following [link](#) .

Story Attribution:

This story: कहाँ गये गालों के गड्ढे? is translated by [Ashvini Vyas](#) .

The © for this translation lies with Pratham Books, 2016.

Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Based on Original story: ' [Where Did Your Dimples Go?](#) ' , by [Radha HS](#) . © Pratham Books , 2016. Some rights reserved.

Released under CC BY 4.0 license.

Other Credits:

This book was first published on StoryWeaver, Pratham Books. The development of this book has been supported by Oracle Giving Initiative. This book was created for StoryWeaver, Pratham Books, with the support of Payal Dhar (Guest Editor) and Kaveri Gopalakrishnan (Art Director).

Illustration Attributions:

Cover page: [A girl and a kitten](#) , by [Kruttika Susarla](#) © Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 2: [Girl watching kittens play](#) , by [Kruttika Susarla](#) © Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 3: [Cat feeding kittens](#) , by [Kruttika Susarla](#) © Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 4: [Girl and father; girl imagining a cat family](#) , by [Kruttika Susarla](#) © Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 5: [Girl and her mother](#) , by [Kruttika Susarla](#) © Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 6: [Hair braided](#) , by [Kruttika Susarla](#) © Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 7: [Girl thinking of her father's family tree](#) , by [Kruttika Susarla](#) © Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 8: [Girl thinking of her mother's family tree](#) , by [Kruttika Susarla](#) © Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 9: [Playing kittens](#) , by [Kruttika Susarla](#) © Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 10: [Man with a cup of coffee](#) , by [Kruttika Susarla](#) © Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions



Some rights reserved. This book is CC--BY--4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, <http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/>

The development of this book has been supported by Oracle Giving Initiative.

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following [link](#) .

Illustration Attributions:

Page 11: [Smiling girl with two braids](#) , by [Kruttika Susarla](#) © Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 12: [Girl with mother and father](#) , by [Kruttika Susarla](#) © Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 13: [Man with a tray of vadas, girl eating](#) , by [Kruttika Susarla](#) © Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 14: [Framed print of a tea](#) , by [Kruttika Susarla](#) © Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 15: [Girl with mother and father](#) , by [Kruttika Susarla](#) © Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 16: [Body parts of different animals](#) , by [Kruttika Susarla](#)

© Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions



Some rights reserved. This book is CC--BY--4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, <http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/>

The development of this book has been supported by Oracle Giving Initiative.

कहाँ गये गालों के गड्ढे? (Hindi)

लांगलेन के घुंघराले बाल उसके अप्पा जैसे और ठुड्डी के बीच गड्ढा उसकी इम्मा जैसा है। इसकी वजह से वो कभी कभी सोचती है कि भाई बहन या माँ-पतिाजी और बच्चे एक जैसे क्यों दिखाई देते हैं। क्या वो उनकी विशेषताओं का एक पुलदि है?

इतने सारे सवाल, लेकिन इम्मा और अप्पा के पास सारे जवाब हैं।

यह पठन सूत्र ३ की कतिाब है, उन बच्चों के लिए जो खुद पढ़ने को तैयार हैं।

PRATHAM BOOKS

Pratham Books goes digital to weave a whole new chapter in the realm of multilingual children's stories. Knitting together children, authors, illustrators and publishers. Folding in teachers, and translators. To create a rich fabric of openly licensed multilingual stories for the children of India -- and the world. Our unique online platform, StoryWeaver, is a playground where children, parents, teachers and librarians can get creative. Come, start weaving today, and help us get a book in every child's hand!